B.A. Part-I Hons session 2019-20
Girija uranw Depatt of Psy Paper IInd
R.M.C. Sasaram

2. गुदा अवस्था (Anal stage) :- मौखिक अवस्था के बाद गुदा अवस्था का आगमन होता है। इस अवस्था में शिशु का लैंगिक आनन्द मुख से हटकर गुदा की प्रक्रियाओं में चला जाता है। इस अवस्था का प्रारम्भ प्रायः छठे माह में होता है और चौथे वर्ष में जाकर समाप्त होता है। इस अवस्था के दो प्रमुख पहलू हैं। (i) निष्कासक (ii) धारणात्मक। निष्कासक अवस्था में शिशु को मल-मूत्र त्यागने में आनन्द का अनुभव होता है। क्योंकि इससे उसका शारीरिक तनाव दूर होता है। यह भी वह समझने लगता है कि माता-पिता उचित रूप से और निश्चित समय और स्थान पर मल मूत्र त्यागने पर जोर देते हैं इससे वह समझ जाता है कि ये गन्दी चीजें हैं और इसे त्यागना आवश्यक है। इसके साथ-साथ वह धारण करने के महत्व को भी समझने लगता है। इसलिए उसे रोककर भी लैंगिक आनन्द का अनुभव करता है। माता-पिता जब उसकी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं परन्तु जब वह मल-मूत्र त्यागना बन्द कर देता है तो वे उसकी ओर अधिक ध्यान देने लग जाते हैं। वे उसकी खुशामद करते हैं, पुचकारते हैं, सीटी बजाते हैं आदि। इस प्रकार धारणात्मक क्रिया शिशु के लिए माता-पिता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का साधन है।

फ्रायड और उसके अनुयायी इस अवस्था में भी आत्म प्रेम (Self Love) आत्म कामुकता (Self eroticism) सुख-दुख के नियम (pleasure pain principle) और वास्तविकता का सिद्धांत (Reality principle) का चित्रण पाते हैं। इस अवस्था की सबसे प्रधान विशेषता यह है कि शिशु जिद,

गुदा, योनि, शिश्न, स्तन और मल में कुछ भी अन्तर नहीं समझता है। इस अवस्था के बाद लिंग प्रधान अवस्था का आगमन होता है।

3. लिंग प्रधान अवस्था (Phallic Stage) — फ्रायड के अनुसार तीन-चार वर्ष की उम्र में बालक अपनी जननेन्द्रिय में रुचि लेने लगता है। इसका एक कारण तो सम्भवतः यह होता है कि इस अवस्था में जननेन्द्रियाँ अधिक संवेदनशील हो जाती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जननेन्द्रियों की कुछ क्रियाएं जैसे दृढ़िकरण (erection) स्पर्श, बाहरी उत्तेजना से आनन्द आदि अल्पावस्था में भी देखने को मिलती है। एक अध्ययन में देखा गया कि तीन से 20 सप्ताह की उम्र के शिशुओं में दृढ़िकरण प्रायः एक बार रोज होता था। फ्रायड के अनुयायी जोर देते हैं कि इस अवस्था में हस्तमैथुन और विपरीत लिंग के व्यक्तियों से शारीरिक सम्पर्क की इच्छा के भी प्रमाण मिलते हैं। इस अवस्था में प्रदर्शन प्रवृत्ति भी बढ़ जाती है। बालक-बालिकाएं आत्म प्रदर्शन में विशेष दिलचस्पी लेते हैं। बालिकाएं बालकों को देखकर ईर्ष्या करती हैं कि वे बालक नहीं। यह शिश्न-ईर्ष्या (penis envy) उनमें हीनभाव पैदा करती है। लिंग का आशय क्या है तथा लड़कियाँ लड़कों से भिन्न क्यों हैं? ये दो बातें उनकी जिज्ञासा को काफी बढ़ाती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार penis envy के हीनभाव के ही कारण कुछ लड़कियों में लड़का बनने एवं कहलाने की इच्छा बड़ी बलवती हो जाती है और पुरुषत्व के गुण जैसे

शेष